सामाजिक परिवर्तन :-

डा० चिरंजीव कुमार ठाकुर
बी.एस.जे. कालेज,
राजनगर, मधुबनी।
अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र विभाग।

BA. Part I
Paper I

सामाजिक परिवर्तन समाज में होने परिवर्तन से है। सामाजिक परिवर्तन एक सर्वभौमिक घटना है। विश्व के किसी भी समाज चाहे वह भारतीय समाज हो या अमेरिकी समाज सामाजिक परिवर्तन सभी जगह है। यह किसी भी काल-समय में हो सकता है एवं समाज पर होता है। सामाजिक परिवर्तन की कोई निश्चित समय सीमा नहीं है। 1922 में आगबर्न ने अपनी पुस्तक Social change में सर्वप्रथम उद्विकास, प्रगति एवं सामाजिक परिवर्तन में भेद किया। अनेक समाजवैज्ञानिकों ने सा० परिवर्तन को अपने-अपने दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है।

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, "समाजशास्त्री होने के नाते हमारी विशेष रुचि प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सम्बन्धों में है। केवल इन सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तनों को ही हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

किंग्सले डेविस के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों को समझते हैं जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज के ढांचे और प्रकार्यों में घटित होते हैं।

गिन्सबर्ग के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन से मेरा तात्पर्य सा० ढांचे में परिवर्तन से है। उदाहरण के रूप में समाज के आकार, उसके विभिन्न अंगों की बनावट या सन्तुलन अथवा उसके संगठन के प्रकारों में होने वाले परिवर्तन से है।

जॉनसन के अनुसार, " अपने मूल अर्थ में सामाजिक परिवर्तन का अर्थ सामाजिक ढांचे में परिवर्तन है।

अतः स्पष्ट है कि मानवीय सम्बंधों, व्यवहारों, संस्थाओं सामाजिक संरचनाओं एवं प्रकार्यों में होने वाले परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन है।

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं :- निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट कर सकते है -

① सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है।
सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध किसी व्यक्ति के विशेष समूह विशेष संस्था, जाति एवं प्रजाति तथा समाज में होने वाले परिवर्तनों से नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध सम्पूर्ण समुदाय में होने वाले परिवर्तनों से है। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक है न कि वैयक्तिक।

② सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना है - सामाजिक परिवर्तन एक सर्वव्यापी घटना है। यह सभी समाजों एवं सभी कालों में होता रहता है। मानव इतिहास में कोई भी ऐसा समाज नहीं रहा जो परिवर्तन के दौर से गुजरा न हो और पूर्णतः स्थिर व स्थायी हो। वीरस्टीड के अनुसार, " कोई भी दो समाज पूर्णतः समान नहीं है। उनके इतिहास और संस्कृति में इतनी विभिन्नता पायी जाती है कि किसी को भी दूसरे का प्रतिरूप नहीं कह सकते।

(3) सामाजिक परिवर्तन अवश्यम्भावी एवं स्वाभाविक है -
सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य एवं स्वाभाविक घटना है. इसको रोका नहीं जा सकता। अनेक बार हम परिवर्तन का विरोध करते और रोकने का प्रयास भी करते है. परन्तु रोक नहीं पाते। मानव की आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर समाज में परिवर्तन होता है। सामाजिक परिवर्तन नियोजित एवं अनियोजित दोनों प्रकार के हो सकते है।

(4) सामाजिक परिवर्तन की गति असमान तथा तुलनात्मक है ÷
प्रत्येक समाज में परिवर्तन होता है परन्तु इसकी गति असमान तथा तुलनात्मक होती है। पूर्वी देशों की तुलना में पाश्चात्य देशों में सामाजिक परिवर्तन की गति तीव्र है। भारत में ग्रामीण समाजों की तुलना में नगरों में परिवर्तन शीघ्र आते है।

(5) सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है :- सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध गुणात्मक परिवर्तन से है, जिसकी माप सम्भव नहीं है। अत: यह एक जटिल तथ्य है। भौतिक संस्कृति में होने वाले परिवर्तन को किलोग्राम, मीटर की भाषा में माप नहीं सकते। सामाजिक परिवर्तन में वृद्धि के साथ-साथ उसकी जटिलता में भी वृद्धि की जा सकती है।

(6) सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है इसलिए इसकी भविष्यवाणी सम्भव नहीं है। वर्तमान समय में जिस प्रकार संचारक्रान्ति हुई है, सामाजिक मीडिया का प्रभाव बढ़ा है उससे किस प्रकार का परिवर्तन जाति प्रथा, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग पर पड़ेगा कहा नहीं जा सकता।

उपरोक्त विशेषताओं से सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।